पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: http://supp.cus.ac.in/

स्वाधीनता संग्राम और आधुनिक हिन्दी कविता

डॉ. मुकेश कुमार
जिला-करनाल, हरियाणा -132036
ई-मेल: drmkhindi@gmail.com

शोध सारांश

आधुनिक हिन्दी कविता का स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक काल के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के दिलों में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत कीं। स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान के कारण ही हमारी मातृभूमि की रक्षा हुई।हर कवि के हृदय में मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम समाया रहता है। उनकी यही श्रद्धा पूंजीभूत होकर देश के देवत्व को पवित्रता की प्रतिमा के रूप में साकार कर देती है।

बीज शब्द :जन्मभूमि,पराधीन, परतंत्र,राष्ट्रीयता, अतीतोन्मुखी, संस्कृति

मूल आलेख:

जब साहित्य में धर्म और ईश्वर के स्थान पर मनुष्य मात्र का अध्ययन किया जाने लगा तो साहित्य का स्वरूप आधुनिक हो गया। आधुनिकता का उदय 'भारतेन्दु युग' की देन है। इस युग में भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों द्वारा रीतिकालीन प्रवृत्ति के विपरीत नवजागरण और राष्ट्रीयता को महत्त्व दिया गया। 'भारतेन्दु युग' में आधुनिकता की प्रवृत्तियों का उदय हुआ और 'द्विवेदी युग' में आकर उनका पूर्ण विकास हुआ। रीतिकालीन श्रृंगारिकता के स्थान पर राष्ट्रीयता एवं पुनर्जागरण का उदय आधुनिकता की उत्कृष्ट उपलब्धि है।

द्विवेदी युग का समय 1900 ई. से 1920 ई. तक माना जाता है। कुछ विद्वान 1900 ई. से 1918 ई. तक भी मानते हैं। इस अवधि में 'द्विवेदी जी' ने 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन करते हुए हिन्दी के सुधार का लक्ष्य भी अपनाया। 'हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान' का जो नारा 'भारतेन्दु युग' के रचनाकारों ने दिया था उसको आगे बढ़ाते हुए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने गद्य और पद्य की भाषा की एकरूपता पर ध्यान दिया। द्विवेदी युग के रचनाकारों ने खड़ी बोली कविता का शुभारम्भ किया। अंग्रेजों का दमनचक्र तीव्र होने के अनुरूप भारतीय

राष्ट्रीय कांग्रेस की रणनीति अंग्रेजों के विरुद्ध होती गई। इन्हीं दिनों चलने वाले स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' में एक लम्बी कविता छापी थी। डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र ने लिखा है कि-''स्वदेशी आन्दोलन की गति निरन्तर तेज होती गई, स्वदेशी वस्तुओं, वस्तु और वस्त्र भण्डार खुलने लगे। अपने भतीजे 'बालेन्द्र नाथ टैगोर' के सहयोग से रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कलकत्ता में एक स्वदेशी कपड़े की दुकान खोल ली थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का भी खुलकर विरोध किया था और कालान्तर में जातीय शिक्षा संस्थान के रूप में विश्वभारती की स्थापना की थी।''[1] सन् 1903 में छपी कविता स्वदेशी वस्त्र को स्वीकार करने में यद्यपि कवि का नाम नहीं है किन्तु डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार द्विवेदी जी किस तरह कविता लिखना, लिखाना चाहते थे। यह रचना उसका अच्छा उदाहरण है-

''स्वदेशी वस्त्र की हमको बड़ाई। विदेशी लाट ने भी है सुनाई।
न तिसबर भी हमें जो लाज आवै। किया क्या हाय रे जगदीश जाये।।''[2]

राष्ट्रीयता और स्वदेशीपन वही दिशा है, इसलिए उनके समकालीन कवियों ने अपनी समय की समस्याओं से ओत-प्रोत कविताएँ लिखी। गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने कानपुर के निवासकाल में द्विवेदी जी से प्रभावित होकर कविताएँ लिखी-

''न उतरे कभी देश का ध्यान मन से,
उठाओ इसे कर्म से मन वचन से।
न डालना पड़े हीनता की जलन से,
वतन का पतन है तुम्हारे पतन से।।''[3]

द्विवेदी युग के समय में ही महात्मा गाँधी का प्रसिद्ध 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' चला था, उनके नेतृत्व में देश के ग्रामीण किसान तथा श्रमिक और विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले कर्मचारी आने लगे थे। इसीसे प्रेरित होकर श्री नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने रोग और वैद की जड़ गुलामी को मानते हुए लिखा है-

''जिसका बैरी मित्र बनेजा, उसका कर देगा संहार,
फूंक दिया कपटी कौआ ने, छलकर उल्लू का परिवार।
प्रबल शत्रु के सर्वनाश का, सीखो समझो सहज उपाय;
मानो आज अनहोनी आल्हा, आओ गाओ ढोल बजाय।।''[4]

देशभक्ति का स्वरूप राजनीति और कूटनीति से प्रेरित है, इसलिए नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने शत्रुओं के सर्वनाश के लिए उपाय सुझाये थे। अंग्रेजों द्वारा अपनायी गयी कूटनीति चालों ने भारतवासियों को सचेत करना शुरू किया था। कवि रायदेवी प्रसाद 'पूर्ण' ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है-

''ठहरो, भागो नहीं, स्वदेशी चर्चा छूकर।

करो पूर्ण उद्योग बनो मत शूकर कूकर।।''[5]

स्वाधीनता संग्राम के आन्दोलनों में नेतृत्व करने के कारण गांधी जी का प्रभाव पूरे द्विवेदी युग की काव्य कृतियों पर देखा जाता है। उनके खिलाफ़ आन्दोलन का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त की कृति 'साकेत' पर परिलक्षित होता है। 'वनगमन' के समय राम के पथ में अयोध्यावासियों का लौटना राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव का ही परिणाम है। कवि लिखता है-

''जाओ, यदि जा सको रौंद हमको यहाँ,
यों कह पथ में लेट गये बहुजन वहाँ।
अश्व अड़े-से खड़े उठाये पैर थे,
क्योंकि समझते प्रेम और वे पैर थे।।''[6]

पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने देश, जाति संबंधी स्थायी साहित्य दिया है और देश से बढ़कर कोई वस्तु नहीं। इसी संदर्भ में कवि लिखता है-

''प्यारा है जितना स्वदेश,
इतना है प्राण प्यारा नहीं।
प्यारी है उतनी न कीर्ति,
जिनकी उद्धार की कामना।।''[7]

निराला की एक प्रसिद्ध कविता 'वर दे वीणा वादिनी' है जिसमें निराला ने देवी सरस्वती से यह प्रार्थना की है कि भारतवासियों के मन में ऐसी धारणा उत्पन्न करो जिससे पूर्ण राष्ट्र के प्रति अपने आपको समर्पित करे।

''वर दे, वीणा वादिनि वर दे
प्रिय स्वतन्त्रता इस अमृत मन्त्र मय
भारत में भर दे।
काट अन्ध-उर के बन्धन स्तर।
बहा जनकि, ज्योर्तिमय निर्झर।।''[8]

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा की राष्ट्रीय परम्परा में कवियों की सूची लम्बी है लेकिन कुछ विशेष कवियों की राष्ट्रीय चेतना को प्रस्तुत किया गया है। इन कवियों ने राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत के चित्रण द्वारा उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का संदेश दिया है। प्राचीनता के बन्धनों को काटना इनके काव्य का लक्ष्य है और राष्ट्र का सर्वोमुखी उत्थान ही इनका प्रतिपाद्य है। इन कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाज को राष्ट्रीय जनजागरण तथा विश्वबन्धुत्व की भावना की वाणी प्रदान की। आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

पंडित श्रीधर पाठक जी राष्ट्रीय कवि हैं। पाठक जी हिन्दी, खड़ी बोली में भारत दैवत के प्रथम महागायक हैं। उनके 'भारत गीत' में भारत एक देव-मूर्ति के रूप में वर्णित है। आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा में सर्वप्रथम उन्होंने ही राष्ट्र का दैवीकरण कर उसका जयगान किया है। हिमाच्छादित उत्तुंग शिखरों से सुशोभित हिमालय, पवित्र सागर कलकल निनाद करने वाली गंगा आदि के सौंदर्य पर कवि विमुग्ध है-

''उन्नत-भाल-विराजित-चारु हिमाचल है
प्रमत-पयोधि-पसर्थित-पद-चल अंचल है
धृत-उज्ज्वल-सरिता-सर-हीर-हार-उर है
जय रवि-प्राय-प्रभासित-तप-या-भासुर है
जय जय भारत है।''[9]

पाठक जी के काव्य में जातीय एकता और सद्भाव का स्वर है। वे सभी जातियों के उत्थान में देश का कल्याण देखते हैं उनकी दृष्टि में सभी धर्मों के पवित्र स्थल पावन है। पाठक जी ने आर्य नारी के श्रेष्ठता का गुणगान किया। कवि नारी समाज में उच्चतम आदर्शों की स्थापना का स्वप्न देखता है। वह अपने उज्ज्वल जीवन के अशोक से सम्पूर्ण जगतको प्रकाशित करने वाली लक्ष्मी तथा सरस्वती सरूपा देवियों की झांकी आज की नारियों में देखना चाहते हैं-

''अहो पूज्य भारत-महिला गण आटे आर्य कुल प्यारी।
अहो आर्य गृह लक्ष्मी सरस्वती आर्य लोक उजयारी।
आर्य जगत् में पुनः जननि निज जीवन ज्योति जगाओ।
आर्य हृदय में पुनः आर्यता का शुचि स्रोत बहाओ।।''[10]

आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा में मैथिलीशरण गुप्त का विशिष्ट स्थान है। उनके अनुसार राष्ट्र का स्वर्णिम अतीत राष्ट्रवासियों में जागरण का शंखनाद फूँकने का सशक्त आधार है। अतीत के महापुरुषों के प्रेरणाप्रद चरित्र राष्ट्र की पीढ़ी को शौर्य और बलिदान का पाठ पढ़ाते हैं-

''संसार में जो कुछ जहाँ फैला प्रकाश विकास है।
इस देश की ही जाति का उसमें प्रधानाभास है।[11]

गुप्त जी के संस्कारों में भारतीय संस्कृति जल और लवण की भाँति घुल-मिल गयी है। संस्कृति प्रेम उनके समस्त काव्यों में व्याप्त है। उनकी धारणा है कि अन्तः में समस्त संस्कृतियाँ, भारतीय संस्कृति में विलीन हो जायेगी-

''आर्य भूमि अन्त में रहेगी आर्य-भूमि ही
आकर मिलेगी यही संस्कृतियाँ सबकी

होगा एक विश्व तीर्थ भारत की भूमिका।''[12]

सियारामशरण गुप्त जी के हृदय में राष्ट्रभक्ति दिखाई देती है। वे कहते हैं कि जय-जय भारतवासी जय जय जय भारत दुर्गम गिरि, वन, अग्नि और प्रबल जलधारा भी उनका गतिरोध नहीं कर सकती। सम्राट चन्द्रगुप्त की सेना के वीरों की वाणी के रूप में कवि मानो तत्कालीन भारत में राष्ट्रीय जागरण को ध्वनि कर रहा है-

''आओ वीरों! आज देश की कीर्ति दें,

सबके सम्मुख मातृभूमि को शीश चढ़ा दें।

संसार दे ले हमें तुच्छ नहीं है हम कभी।''[13]

रामनरेश त्रिपाठी जी आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा के महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है। रामनरेश त्रिपाठी जी को अपने स्वर्णिम अतीत पर अभिमान है। अतीत के तपोनिष्ठ ऋषि-मुनियों, धर्मरक्षक सम्राटों और रणकुशल योद्धाओं का कविवर ने श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। रामनरेश त्रिपाठी जी द्वारा राष्ट्र की पराधीनता पर व्यक्त क्षोभ अत्यन्त मार्मिक है। अन्यथा कातर हृदय पुकार उठता है-

''पर-पद दलित, पर मुक्षापेक्षी, पराधीन, परतंत्र, पराजित

होकर कहीं आर्य जीते हैं? पामर, पशु सम पतित पराजित।।''[14]

रामनरेश त्रिपाठी जी के उद्बोधन गीत अत्यन्त मनोरम है। जिन्हें स्वत्व प्राप्ति का पावन संदेश निहित है। कवि ने भारतियों की आर्थिक दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। दरिद्रता तो जैसे उनकी जीवन संगिनी है-

''अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, उद्यम कौन उपाय।

बन भी नहीं ठौर टिकने को, कहाँ जायें? क्या खायें?''[15]

पंडित श्याम नारायण पाण्डेय जी राष्ट्रीयता अतीतोन्मुखी है। वीर शिरोमणि महाराजा प्रताप और अमर वीरांगना के चरित्र पाण्डेय जी के लिए अमोघ प्रेरणा के स्रोत हैं, जिनका यशोगान क्रमशः 'हल्दीघाटी' और 'जौहर' महाकाव्यों और आरती की स्फुट कविताओं में किया गया। गुरु गोविन्द सिंह जी के दोनों पुत्र जोरावर सिंह और फतेह सिंह के बलिदान पर कवि को गर्व है। वे अपनी संस्कृति के प्रति आस्थावान हैं। उनके काव्यों में भारतीय जागरण का पावन संदेश है-

''जागो, तुम्हारी जन्मभूमि को रौंद लुटेरे लूट रहे।

उठो, तुम्हारी मातृभूमि के, जीवन के स्वर टूट रहे।''[16]

राष्ट्र के दैवीकरण की यह प्रवृत्ति प्रसाद जी के काव्य में परिलक्षित नहीं होती तथापि हिमालय की महानता और भव्यता का वर्णन उन्होंने भी किया है। उन्हें प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों से सुशोभित और हिममणि से मंडित हिमालय राष्ट्र के गौरव के रूप में दिखाई पड़ता है-

''हिमगिरि का उत्तुंग श्रृंग है सामने

खड़ बताता है भारत के गर्व को

पड़ती इस पर जब माला रवि-रश्मि की

मणिमय हो जाता है नवल प्रभात में।''[17]

प्रसाद जी के काव्य में स्वदेश-चिंतन की पंक्तियाँ दृष्टिगोचर होती है, उनका प्राण प्रिय राष्ट्र, जीवन की प्रफुल्लता और मधुरता का कोश तथा सबका आश्रय स्थल है। उसकी प्राकृतिक सुषमा अनुपम है-

''अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहु अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्म विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन-हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।''[18]

राष्ट्रकवि पं. श्यामनारायण पाण्डेय जी के हृदय में जन्मभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा का वास है। उनका राष्ट्र प्रेम किसी प्रकार की दलीय, प्रादेशिक, धार्मिक, जातिगत संकीर्णता से सम्बन्ध न होकर पूर्णतः राष्ट्रीय चेतना पर प्रतिष्ठित है। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक विचारधारा में मातृ-पितृ देश प्रेम को अधिक महत्त्व दिया गया है। माता जीजाबाई अपने शूरवीर पुत्र शिवाजी से कहती है-

''बेटा मुझसे पहले रखना,

जन्मभूमि का ध्यान

बेटा मुझको पहले करना

संस्कृति का सम्मान।।''[19]

हर मानव के हृदय में मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम समाया रहता है। उनकी यही श्रद्धा पूंजीभूत होकर देश के देवत्व को पवित्रता की प्रतिमा के रूप में साकार कर देती है। पाण्डेय जी ने इसी श्रद्धा से जन्मभूमि की प्रशस्ति गाई है और सम्पूर्ण देश में स्वदेश की पवित्र उदार भावना जताई। कवि ने महाराष्ट्र की भूमि का गुणगान किया है-

''आगे महाराष्ट्र है,

रुको

विनीत भाव सेवदो

कर्मशील सूरया

शिषा क कर्मभूमि है

संत तुकाराम की

समर्थ रामदास की

अकाम ज्ञानदेव नामदेव
एकनाथ की
पवित्र धर्मभूमि है,
झुको
नमस्कार करो।''[20]

मातृभूमि के लिए सर्वस्व अर्पण करना प्रत्येक भारतीय का परम कर्त्तव्य बनता है। वीर रस के राष्ट्र कवि श्यामनारायण पाण्डेय जी को मातृभूमि के लिए आत्मोत्सर्ग करने वालों के प्रति विशेष आदर है। मातृभूमि के लिए बलिदान करने वाले नवयुवक कहते हैं-

''हम माता के गुण गाएँगे,
बलि जन्मभूमि पर पाएँगे,
अपना झंडा फहराएँगे
हम हाहाकार मचाएँगे।।''[21]

मातृभूमि का प्रेम धार्मिक स्थलों के कारण अवश्य बढ़ता है परन्तु राष्ट्रीयता की भावना धर्मस्थल से भी अधिक महत्त्व कर्मस्थल को देती है। कर्मभूमि के उच्चारण मात्र से श्रद्धा के भाव जागृत होते हैं। कर्मभूमि ही हमारी वंदनीय है-

''मुझे न जाना गंगा सागर
मुझे न समेव पर, काशी।
तीर्थ राज चित्तौड़ देखने को
मेरी आँखें प्यासी।
सुंदरियों ने जहां देशहित,
जौहर का करना सीखा।
स्वतंत्रता के लिए जहाँ
बच्चों ने भी मरना सीखा।।''[22]

अपने राष्ट्र के प्रति पवित्र प्रेम एवं कर्त्तव्यव्यक्तियों को राष्ट्र प्रेम निभाने के लिए अनेक संकट झेलने चाहिए। राष्ट्र धर्म के लिए कवि इस प्रकार प्रेरित करता है-

''जन्मभूमि के संरक्षण का
भार वहन करना होगा।
राष्ट्र धर्म रक्षा वेला में,

कष्ट सहन करना होगा।।''[23]

पं. श्यामनारायण पाण्डेय जी मातृभूमि के लिए उत्सर्ग हो जाने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानते हैं। लेकिन वह सोचते हैं कि बलिदान कर्म विरहित नहीं होना चाहिए। कर्म ही जीवन का आधार है। कर्म ही पूजा है, कर्म ही प्राण है, इसलिए उस कर्म की लोकहितार्थ बलि जाने का भाव उन्होंने अपने काव्यों में अभिव्यक्त किया है। लेकिन मरने से पहले यदि कुछ अच्छा काम करें तो नाम अमर हो जाता है। यही भावना शिवाजी द्वारा व्यक्त करते हैं-

''इस धरती पर तो क्षणे-क्षणे
नित लोग जनमते-मरते हैं।
पर पूज्यपाद वे धन्य पुरुष
जो नाम उजागर करते हैं।।''[24]

अपने देश पर होने वाला अन्याय और अत्याचार वीरों के हृदय को वेदना विह्वल कर देता है और वे उसके प्रतिकार के लिए, स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए माता के परवशता के बंधन उखाड़ने के लिए उत्तेजित होते हैं। कविवर श्यामनारायण पाण्डेय जी देश रक्षा के लिए युद्ध और बलिदान करने वालों की प्रशंसा करते हैं और उनको सहारा देते हैं-

''केसरिया तन पर, वक्ष तान,
चल पड़े युद्ध में, नव जवान।
होली जल उठी जली सतियाँ,
अब भी कण-कण में विद्यमान।
जौहरव्रत वाले चिरंजीव। हे रण मतवाले चिरंजीव।।''[25]

राष्ट्रकवि पंडित श्यामनारायण पाण्डेय जी बलिदान की महत्ता के गायक हैं। उन्होंने अपनी अदम्य राष्ट्रीय भावना से देश के कण-कण को उत्सर्ग के लिए प्रेरित किया है। वे लिखते हैं-

''भारत जननी का मान किया,
बलिवेदी पर बलिदान किया।
अपना पूरा अरमान किया,
अपने को भी कुर्बान किया।।''[26]

पंडित श्यामनारायण पाण्डेय का ध्यान पराधीनता पर प्रथम प्रहार करने वाले चित्तौड़ के महाप्रतापी राणा प्रताप की ओर आकृष्ट हुआ। स्वतंत्रता की चिर ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने के लिए वह वन की खाक

छानता रहा, मगर उसने अपने गर्वोन्मत्त मस्तक को हिमगिरि के समान ऊँचा उठाए रखा। महाराणा प्रताप जी स्वतंत्रता के लिए प्रेरणादायक रहे हैं-

‘‘स्वतंत्रता के लिए मरो
राणा ने पाठ पढ़ाया था
इसी वेदिका पर वीरों ने
अपना शीश चढ़ाया था।।
तुम भी तो उनके वंशज हो
काम करो, कुछ नाम करो
स्वतंत्रता की बलिवेदी है,
झुककर इसे प्रणाम करो।।’’[27]

राष्ट्रकवि श्यामनारायण पाण्डेय जी भारतीयों को स्वदेश, स्वधर्म रक्षा के लिए अपना जीवन अर्पण करने के लिए प्रेरणा देते हैं। हमारा तन, मन, धन देश के लिए अर्पित हो। हमारी शिक्षा नीति सदाचार में स्वदेश प्रेम हो। कवि गुरुदेव से ऐसी सीख चाहते हैं-

‘‘जिससे स्वदेश का मंगल हो
जिससे उद्धार धारा का हो
अब वही चाहिए विद्या धन,
जिससे सत्कार जरा का हो,
जिससे रक्षित हो शिखा सूत्र
जिससे स्वधर्म की जय जय हो
गुरुदेव चाहिए वही सीख
जिससे जनजीवन निर्भय हो।।’’[28]

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नारी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसी प्रकार पं. श्यामनारायण पाण्डेय जी ने नारी के स्वतंत्रता प्रेम, राष्ट्रभक्ति, साहस, त्याग और बलिदान की अमर गाथाएं प्रस्तुत की हैं। उन्होंने नारी को अबला रूप की अपेक्षा शक्तिस्वरूपा, तेजस्विनी और निर्भीकता की प्रतिमूर्ति के रूप में अधिक चित्रित किया है। नारी केवल चारदीवारी के अंदर बंद रहने योग्य अबला नहीं है। वह निर्भय समाजसेविका, राष्ट्र सेविका है। वह समाज के लिए गौरव का प्रतीक और देश रक्षिका है। साहसी एवं बहादुर नारी का स्वरूप इस प्रकार है-

‘‘इन्कार करो यदि तुम,

मैं बनूँ महाकाली-सी।
उत्साह न हो तो बोलो,
गरजूँ खप्परवाली-सी।।
मैं शेषनाग की कसुट
सी एक बार जग जाऊँ।।''[29]

दिनकर अपनी युवावस्था से ही विलासमयी वस्तुओं के आक्रमण से दूर रहकर राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए प्रतिबद्ध थे। आगे चलकर मैथिलीशरण गुप्त की ही भांति यह राष्ट्रीय भावना के प्रखर कवि बने। विदेशी शासन की क्रूरता एवं अमानुषिक खेमे के ही कारण इनका यह मानना था कि क्रान्ति का मार्ग संघर्ष का कठिन मार्ग है, गाँधीवादी युधिष्ठरपन से स्वाधीनता संभव नहीं। अपनी 'हिमालय' कविता में वह कहते हैं-

''रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर पर,
फिरा हमें गांडिव गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर।''[30]

दिनकर दलित-दमित मनुष्यों के जीवन में आशा का दीप जलाने का प्रयास करते हैं साथ ही उनमें राष्ट्रीय चेतना को प्रतिष्ठित करते दिखाई देते हैं। सामाजिक साम्य के प्रति उनका आग्रह उनकी राष्ट्रीय चेतना का आधार कहा जा सकता है। 'कविता की पुकार' में वह कहते हैं-

'विद्युत छोड़ दीप साजूँगी, महल छोड़ तृण-कृटी-प्रवेश,
तुम गाँवों के बनो भिखारी, मैं भिखारिणी का लूँ वेश।''[31]

एक भारतीय आत्मा माखनलाल जी के लिये कितना योग्य एवं सटीक है। यह तो उनका जीवन और उनका काव्य सर्जन ही बयां कर रहा है। इसमें जरा भी अतिशयोक्ति नजर नहीं आती है कि कवि को इस नाम से विभूषित करना देशवासी की कभी भूल हो सकती है बल्कि इस नामकरण के वे सच्चे अधिकारी भी हैं। जिसने भारत और भारतीयता की अस्मिता को पूरी तरह आत्मसात् कर उसकी रक्षा में अपनी रचनाधर्मिता को समर्पित करने में विश्वास किया है। एक भारतीय आत्मा ऐसा नाम है जिसने भारत की परतंत्रता को स्वीकार करने की बजाए उसकी रक्षार्थ और स्वतंत्रता की खातिर कारावास का कठोर भावनापूर्ण कष्ट झेलना स्वीकार कर लिया। तब इस नामकरण को स्वरूप सिद्ध हुआ कि भारतीय आत्मा से तात्पर्य भारत मेरा देश है और मैं इसकी आत्मा हूँ यह एक ऐसा उपनाम है जो माखनलाल चतुर्वेदी जी के हृदय में स्थित भारत देश पर अपने नैसर्गिक अपनापन और हक को दर्शाता है और अपने स्वयं को और देश के युवाओं को सिपाही मानते थे। उनकी 'सिपाही' कविता की कुछ पंक्तियों से उनके भीतरी देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को देखा जा सकता है-

''बोल अरे सेनापति मेरे मन की घुंडी खोल
जल भल नभ हिल डूल जाने दे

तु किंचित मत डोल
वे हथियार या कि मत दे तु
पर तु कर हुंकार
ज्ञातो को मत अज्ञातों को
तु इस बार पुकार धीरज रोग प्रतीक्षा चिंता
सपने बने तबाही
कह तैयार द्वार खुलने दे
मैं हूँ एक सिपाही।।''[32]

माखनलाल जी के काव्य सर्जन में गाँधीवादी राष्ट्रीयता वीर पूजा प्रेम आराधना के होते हुए भी देशहित और राष्ट्रभक्ति का बोलबाला अत्याधिक गुंजायमान है। इन्होंने अपने साहित्य में जो स्थान राष्ट्रभक्ति को दिया है वो अन्य किसी प्रसंग पर नहीं देख सकते। इन्होंने अपने इसी रवैया के कारण अंग्रेजी सरकार की नींद में बाधा डाल दी थी। अपने प्रत्येक भारतवासी से यही पुकार करते थे कि विदेशी शोषण और अत्याचार के खिलाफ जिस व्यक्ति के हृदय में ज्वाला न धधक पड़े तो कैसे भारतीय कहलाने योग्य हैं। उसका तो जीवन निरर्थक तथा मृत है।

''रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी
जांच कर तू सीस दे देकर जवानी।''[33]

राम और कृष्ण की परंपरा में ही सुभद्रा कुमारी चौहान ने महात्मा गांधी का स्मरण किया है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इस महानायक की अनुयायी होने के नाते सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में गांधी का अत्यधिक सम्मानपूर्वक उल्लेख मिलता है। उनके प्रति वे अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करती हैं। 'लोहे को पानी कर देना' कविता में उन्होंने अत्याचारियों के विरुद्ध युगों से चल रहे संघर्ष की परम्परा से गांधी को जोड़कर स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार राम ने रावण का और कृष्ण ने कंस का मर्दन किया, उसी प्रकार महात्मा गांधी का नेतृत्व अंग्रेजों की दासता से अवश्य मुक्ति दिलायेगा। उन्होंने गांधी के उस विशिष्ट सामर्थ्य को प्रणाम किया है जिसके बल पर उन्होंने विश्व को संकटों से उबारा। देश के दीन-दुखी जन की आशा के केन्द्र गांधी को वे इन शब्दों में याद करती हैं-

''वह कौन? एक मुट्ठी भर का अधनंगा-सा बूढ़ा फकीर।
जिसके माथे पर सत्य तेज, जिसकी आँखों में विश्व पीर।
जिसकी वाणी में शक्ति, भेद जो कुलिश-कपाटों को जाती।
जिसके अंतर का प्रेम देख, असिधारा कुण्ठित हो जाती।

वह गांधी हम सबका बापू, वह अखिल विश्व का प्यारा।

वह उनमें ही से एक, जिन्होंने आकर विश्व उबारा है।''[34]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने गांधी के अतिरिक्त बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय के महान व्यक्तित्व को भी अवतार का दर्जा देकर प्रेरणा प्राप्त करने का संदेश दिया है। सन् 1921 में मध्यप्रांत और बरार की विद्यार्थी परिषदके जबलपुर अधिवेशन के सभापति पंडित सुंदरलाल के सम्मानार्थ उन्होंने जो स्वागत गीत पढ़ा, वह इस बात का प्रमाण है कि उनके मन में युगनायकों के प्रति अपार श्रद्धा और अटूट विश्वास था-

''कर्म के योगी, शक्ति प्रयोगी

देश भविष्य सुधारियेगा।

हाँ, वीर वेश के दीन देश के

जीवन प्राण पधारियेगा।''[35]

राष्ट्रीय-जागरण का शंखनाद करने वाले महान राष्ट्रीय भक्त कवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी ने भी सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के उक्त प्रवाह में यथोचित योगदान देने का प्रयास किया है।

पंडित सोहन लाल द्विवेदी ने 'वासवदत्ता', 'कुणाल और विषपान' नामक सांस्कृतिक रचनाओं के अन्तर्गत चित्रित चरित्र-नायकों का वैयक्तिक जीवन ऐसी ही उदात्त चारित्रिक विशेषताओं से सम्पन्न है। वासवदत्ता उपाख्यान में चित्रित तथागत का चरित्र अतुलनीय ऊँचाई तक उठाया गया है। वह सांस्कृतिक दृष्टि से नैतिक-जीवन की प्रतिष्ठा का द्योतक है। इसी संदर्भ में वे लिखते हैं-

''गौतक यह देखकर

माया सब लेखकर,

चकित-से विस्मित-से, भ्रमित-से, अवाक्-से,

लगे देखने सभी लीला वासवदत्ता की,

शांत हो बोले साधु

देवी, क्या कहता हो?

सावधान होकर जरा सोचो तो।''[36]

निष्कर्ष-

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि स्वाधीनता संग्राम में आधुनिक हिन्दी कविता का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से जन-जन के हृदय में राष्ट्रीय भक्ति को भर दिया था। इन कवियों ने स्वाधीनता आन्दोलन में मातृभूमि की रक्षा की। भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थापूर्ण दृष्टिकोण,

त्याग, परोपकार तथा अभावग्रस्त व्यक्ति के प्रति इनकी करुणा का उद्रेक उपदेशात्मक रूप में विद्यमान रहा। जो राष्ट्र के प्रति अनुराग का द्योतक है।

संदर्भ

1. मिश्र, डॉ. कृष्ण बिहारी. हिन्दी पत्रकारिता. पृ. 241
2. शर्मा, डॉ. रामविलास. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृ. 354
3. सं. चतुर्वेदी, नरेश चन्द्र. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' जीवन और काव्य, पृ. 123
4.शंकर,नाथूराम शर्मा. व्यास-विजय, पृ. 3
5.पूर्ण,रायदेवी प्रसाद.पूर्ण-संग्रह, पृ. 214
6.गुप्त, मैथिलीशरण. साकेत, पृ. 60
7.कुमार, डॉ. मुकेश. खड़ी बोली हिन्दी के उन्नायक महाकवि हरिऔध, भूमिका
8.सं. नवल, नंद किशोर. निराला रचनावली, पृ. 210
9.पाठक, श्रीधर. भारत गीत, पृ. 75
10.वही, पृ. 160
11.गुप्त, मैथिलीशरण.भारत-भारती, पृ. 16
12.वही, सिद्धराज, पृ. 36
13.गुप्त, सियारामशरण. मौर्य विजय, पृ. 81
14.आधुनिक कवि, पृ. 35
15.वही, पृ. 36
16.पाण्डेय, पं. श्यामनारायण. जौहर, पृ. 210
17.प्रसाद, जयशंकर. कानन-कुसुम, पृ. 110
18.वही, पृ. 101
19.पाण्डेय, पं. श्यामनारायण. शिवाजी, पृ. 11
20.वही, पृ. 143
21.वही, हल्दीघाटी, पृ. 15
22.वही, पृ. 113
23.वही, परशुराम, पृ. 163
24.वही, शिवाजी, पृ. 299
25.वही, आरती, पृ. 83

26.वही, हल्दीघाटी, पृ. 14

27.वही, पृ. 19

28.वही, शिवाजी, पृ. 24

29.वही, जौहर, पृ. 76

30.सिंह, विजेन्द्र नारायण. दिनकर, पृ. 62

31.वही, पृ. 69

32.पालीवाल, कृष्णदत्त. माखनलाल चतुर्वेदी, रचना संचयन, पृ. 69

33.वही, पृ. 72

34.राजे, सुमन.हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, पृ. 172-173

35.वही, पृ. 102

36.द्विवेदी, पं. सोहनलाल.वासवदत्ता, पृ. 3

------------------------X------------------------